कछुआ और खरगोश

डॉ. इमेल्डा जोसफ

प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन

हर एक जीव जंतु अपने आप में सोचता है कि वह दूसरों से बड़ा है। इसका एक उदाहरण है सालों से पहले लिखी कछुआ एवं खरगोश की कहानी। अपने अहं भाव से हारे हुए खरगोश और अपने आत्मविश्वास और समर्पण से जीता हुआ कछुआ। हर एक आदमी में एक कछुआ और खरगोश जैसा व्यक्तित्व होता है।

अपना जीवन एक प्रतियोगिता समझकर हम हर एक दिन दौड़ना शुरू करते हैं। अपना विजय अपने हाथ में है। हम किस तरह से भी शक्तिमान या प्रतिभाशाली होने पर भी हमारे मन की अवस्था हमें जीतने या हराने की स्थिति तक पहुंचाती है। कछुआ दौड़ाने में अच्छा नहीं है, लेकिन खरगोश अच्छा है। इस साहचर्य में दोनों को चुनौती देना हाथी जैसे आदमियों के लिए तमाशा है। अहं भाव से भरा हमारा मन अपने जीत को सुनिश्चित कर कछुआ जैसे सीधा – सादा सहयोगियों के साथ दौड़ना शुरू करते हैं। खरगोश जैसे अस्सी प्रतिशत आदमी प्रतियोगिता को तुच्छ मानकर नींद में डूब जाते हैं। लेकिन कछुआ जैसा सीधा सादा लोग अपनी बलहीनता को समझकर अपने काम (प्रतियोगिता) में डूब जाते हैं। नींद के बाद उड़नेवालों को जीत गए कछुए को देखकर अपने बारे में समझने का अवसर मिलता है। लेकिन बहुत देरी होने के कारण इसका कोई फल नहीं है।

कोई भी प्रतियोगिता हो, या दैनंदिन काम हो आत्मविश्वास के साथ अपने व्यक्तित्व को अपनाना चाहिए। प्रतियोगिता में जीत लेना हमारा लक्ष्य है। हाथी जैसे अनेक लोग हमारे बीच में है। उनको प्रोत्साहन देना हमारा काम नहीं है। काम जैसा भी हो, छोटा या बड़ा – हमारा लक्ष्य सिर्फ जीत है। आत्मविश्वास के साथ अपने व्यक्तित्व को समझकर कोई भी प्रतियोगी से लड़ना चाहिए। हमें समझना चाहिए कि हाथी, खरगोश, कछुआ – यह तो हम ही हैं।

हिन्दी पखवाड़ा समारोह 2019 के दौरान आयोजित हिन्दी लेखन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त लेख